इकाई 31 युद्धों के स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपने उन कारकों का अध्ययन किया जिनके परिणामस्वरूप दो विश्व युद्ध हुए। आप यह भी जानते हैं कि विद्वानों ने दो विश्व युद्धों के बीच के अंतराल के 30 वर्षों को भी युद्ध की ही संज्ञा दी है। इसलिए प्रस्तुत इकाई में इस अनवरत चलते युद्ध की प्रकृति पर विचार किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आधुनिक युद्ध की प्रकृति, इसकी सम्पूर्ण प्रकृति और मानव समाज पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- प्रमुख तकनीकी विकास और इसके परिणामस्वरूप नए-नए हथियारों के निर्माण की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- आधुनिक युद्ध प्रणाली के कारण सैनिक संस्थाओं की प्रकृति में आए बदलावों को जान सकेंगे;
- युद्ध के कारण हुए व्यापक विध्वंस, नर-संहार और घर बार छूटने की प्रकृति को जान सकेंगे;
- एकल, अबाधित प्रक्रिया के रूप में दो विश्व युद्धों के बीच की निरंतरता को समझ सकेंगे; और
- विचारधारात्मक आधारों पर खेमों में विभाजित समूहों के बारे में जान सकेंगे।

31.1 प्रस्तावना

दो साथ-साथ चल रही प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप आधुनिक युद्ध प्रणाली की प्रकृति निर्धारित हुई। इसमें आधुनिक राजनीति के उदय का बहुत बड़ा योगदान था जिसके कारण किसी खास विचार, उद्देश्य या नीति

केंद्र में रखकर जनता को लामबंद किया गया था। 'युद्धरत राष्ट्र' के विचार या फ्रांसीसी क्रांति में अनिवार्य सैनिक भर्ती में इसी विचार का प्रतिफलन हुआ था। 'युद्ध के जनतांत्रीकरण' के कारण युद्ध जनता युद्ध में बदल गए जिसमें सैनिक रणनीति के तहत नागरिक और नागरिक जीवन को भी निशाना बनाया गया। आधुनिक युद्ध प्रणाली को प्रभावित करने में औद्योगिक अर्थव्यवस्था का भी प्रमुख हाथ था जिसके कारण व्यापक पैमाने पर युद्ध लड़ने के लिए संसाधन, संगठनात्मक तकनीक और बड़े पैमाने पर युद्ध लड़ने के लिए प्रेरणा के तरीके भी उपलब्ध कराए गए और इस प्रकार युद्ध पूर्ण युद्ध में परिवर्तित हो गया अर्थात पूरा औद्योगिक समाज युद्ध में शामिल हो गया। अमेरिकी गृह युद्ध (1861-65) ऐसा पहला आधुनिक युद्ध था जिसमें 20वीं शताब्दी के दौरान पूरी दुनिया में आने वाले समय में होने वाले टकरावों की प्रकृति और स्वरूप की झलक मिलती है।

31.2 पूर्ण युद्ध की धारणा और इसके प्रभाव

19वीं और 20वीं शताब्दी में युद्ध के स्वरूप में परिवर्तन आया। इससे पहले पेशेवर सैनिक समूह अपनी निपुणता या अपने युद्ध कौशल के आधार पर युद्ध में भाग लेते थे; अब हथियार बनाने में औद्योगिक संसाधनों की पूर्ण लामबंदी की गई और समस्त औद्योगिक समाज पूर्ण रूप से पूरी दुनिया में सैनिक और असैनिक ठिकानों को मशीनी हथियारों से लैस फौज के द्वारा निशाना बनाने लगा। सम्पूर्ण विनाश करने हेतु हथियार बनाने के लिए वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी तथा इन हथियारों के उपयोग द्वारा शत्रु देशों को पूर्ण रूप से नष्ट करने तथा इस पृथ्वी पर मानव जाति के जीवन को खतरे में डालने के प्रयास किए गए। 1907 में विभिन्न शक्तियों के बीच समझौता करने के लिए हेग (1907) में अन्तरराष्ट्रीय मध्यस्थता अदालत की स्थापना की गई। परंतु प्रमुख शक्तियों के बीच हथियारों की होड़ चलती रही। निजी उद्यमों के लाभ कमाने की मंशा ने भी आग में घी का काम किया। जर्मनी में क्रुप, ब्रिटेन में विकर्स-आर्मस्ट्रांग, फ्रांस में श्नेडर-क्रेसोट, आस्ट्रिया में स्कोदा और रूस में प्युटिलोफ ऐसी ही कुछ निजी उद्यम थे जिन्हें 'मौत के सौदागर' के नाम से जाना जाता था। इस युग के अति राष्ट्रीयतावाद ने भी बढ़ते सैन्यवाद को मदद पहुंचाई।

31.2.1 लंबे समय तक युद्ध करने की सामर्थ्य पाने के लिए अपनाई गई खंदक युद्ध प्रणाली

जिस समय प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ उस समय अधिकांश राजनीतिज्ञों और लोगों को लग रहा था कि यह युद्ध ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा और जल्द ही समाप्त हो जाएगा। लेकिन जल्दी ही एक ऐसी स्थिति सामने आई कि यह युद्ध लंबा खिंचने लगा। स्वीटजरलैंड से लेकर उत्तरी सागर तक फैले 600 मील लंबे पश्चिमी सीमांत में खंदक युद्ध प्रणाली शुरू हो गई। इस लंबे सीमांत पर चल रहे युद्ध के कारण स्थानीय, छोटे स्तर पर और प्रतिबंधित युद्ध प्रणाली का अन्त हो गया। वस्तुत: 18वीं शताब्दी की प्रतिबंधित युद्ध प्रणाली निरंकुश और वंशानुगत व्यवस्था का हिस्सा थी। यह सामंती यूरोप के सैन्य संगठन का बचा हुआ अंश था जिसमें सेना का नेतृत्व सामंत किया करते थे। अब लाखों लोग रेत की बोरियां सामने रखकर और खंदक खोदकर एक दूसरे पर आक्रमण करते थे तथा चूहे और जूं के साथ उनकी जैसी जिंदगी बिताते थे। टेढ़े-मेढ़े, लकड़ी से और रेत के बोरे से ढके खंदकों के बाहर कंटीले तारों के जाल और सैनिकों के छिपने के लिए इधर-उधर फैले ढके हुए गड्ढे बनाए गए।

अक्सर, खंदक में कई सतहें होती थीं। शत्रु सेनाओं द्वारा प्रयोग की गई भारी तोप और मशीनगन की गोलाबारी से आगे बढ पाना लगभग असंभव था। इस गतिरोध को तोड़ने के लिए प्रत्येक पक्ष अपना युद्ध-उत्पादन बढ़ाना चाहता था। इसके कारण मानव और औद्योगिक संसाधनों की पूर्ण लामबंदी आवश्यक हो गई। युद्ध राष्ट्रीय संसाधनों रूपी औद्योगिक ताकत और आपूर्ति क्षमता के पूरे इस्तेमाल के लिए होड़ में तबदील हो गया जिसमें इस बात का ज्यादा महत्व हो गया कि किसमें लंबे समय तक युद्ध करने की सामर्थ्य है। इसके लिए युद्धरत राज्यों के लोगों के पूरे जीवन और अर्थव्यवस्था को युद्ध की तैयारी और युद्ध लड़ने में झोंकने की आवश्यकता थी। युद्धरत राष्ट्रों के सभी वर्गों और समूहों में व्यक्तिगत लगाव की भावना उजागर करने की जरूरत पड़ी क्योंकि जनता युद्ध का निशाना बनने लगी। वेडरन के युद्ध (फरवरी-जुलाई 1916) में, जिसमें जर्मनी ने सफलता प्राप्त करने की कोशिश की, दो लाख लोग शामिल हुए थे और इसमें एक लाख लोग मारे गए थे। वेडरन में किए गए आक्रमण को रोकने के लिए ब्रिटेन ने सोम्मे पर हमला किया। इसमें 420,000 ब्रिटिश लोग मारे गए।

इस युद्ध में ब्रिटिश तोप तथा टैंकों का प्रयोग करने वाले सेना के अंग को 23,000 टन प्रक्षेपक उपलब्ध कराया गया था जबकि वाटरलू के प्रसिद्ध युद्ध में मात्र 100 टन प्रक्षेपकों का इस्तेमाल हुआ था। येपरस का तीसरा युद्ध (1917) 19 सालों तक चला। इसमें ब्रिटेन ने 43 लाख बम के गोले बरसाए जिनका वजन 107,000 टन था और जिन्हें 55,000 मजदूरों ने एक साल की कड़ी मेहनत के फलस्वरूप बनाया था। यह युद्ध यूरोप तक सीमित था परंतु संसाधन इतनी तीव्रता से समाप्त हुए कि यूरोपीय शक्तियों को पूरी दुनिया से आपूर्ति की वस्तुएं मंगानी पड़ी।

31.2.2 नौसेना नाकाबंदी और पनडुब्बी युद्ध

युद्ध के समय दार्शनिक कार्ल वॉन क्लास्विज ने युद्ध को ' सीमाओं का अतिक्रमण कर की गई हिंसा' के रूप में परिभाषित किया था। पूर्ण युद्ध के युग में 'असैनिक' और 'सैनिक' ठिकानों और खर्चों में कोई अंतर नहीं रह गया था। युद्ध के हथियारों और रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं का महत्व बढ़ा क्योंकि खंदक में रहने वाले सैनिकों के लिए अनवरत समान की आपूर्ति की जरूरत थी। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 'घरेलू मोर्चा' मुहावरा काफी प्रचलित हो गया था। सैन्य रणनीति के तहत सबसे पहले दुश्मनों के आपूर्ति स्रोत और मार्ग पर हमला किया जाता था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान नौसैनिक नाकाबंदी और अप्रतिबंधित पनडुब्बी युद्ध प्रणाली युद्ध के आर्थिक पहलू को दर्शाती है। इसके बाद द्वितीय विश्व युद्ध में नागरिकों पर बम गिराए गए और दुश्मन के पूरे समाज का विनाश करने का प्रयास किया गया।

मित्र राष्ट्रों ने केंद्रीय शक्तियों (जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी) और उनके युद्धरत साथियों जैसे तुर्की और बुल्गारिया की नौसैनिक नाकाबंदी करने का प्रयास किया। यह नाकेबंदी असफल रही क्योंकि केंद्रीय शक्तियों को कुछ तटस्थ देशों से सामानों की आपूर्ति होती रही। जर्मनी ने अपनी –यू नौकाओं–पनडुब्बियों से अक्टूबर 1914 में मित्र राष्ट्रों के व्यापारिक जहाजों पर आक्रमण किया। 1915-17 में यह आक्रमण और तेज हो गया। 1915 के मध्य तक मित्र राष्ट्रों के जहाजों के डूबने का औसत 116,000 टन (भार के हिसाब से) था जो अप्रैल 1917 में बढ़कर 866,000 टन हो गया। इस प्रकार संसाधनों के नुकसान से अधिक राजनैतिक आघात पहुंचा तथा अमेरिका ने जहाजों के डुबोए जाने पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। मित्र राष्ट्रों ने भी पनडुब्बियों का मुकाबला करने का तरीका निकाला। रक्षा व्यवस्था शुरू की गई, जहाजों का उत्पादन बढ़ाया गया और जहाजों की आवागमन गतिविधियों के बीच बेहतर तालमेल और प्रबंधन स्थापित किया गया।

31.2.3 द्वितीय विश्व युद्ध में लामबंदी की प्रकृति

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान औद्योगिक लामबंदी की प्रकृति बिलकुल बदल गई। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जहां कुछ क्षेत्रों में ही व्यापक स्तर पर उत्पादन शुरू हुआ था वहीं दूसरे विश्व युद्ध में लगभग सभी उद्योगों को शामिल कर लिया गया। युद्ध में काम आने वाले इंजन, टैंक, वायुयान, रडार आदि में उच्च तकनीक का प्रयोग किया गया था और ये संवेदनशील थे। इसके लिए अलग-अलग समय तालिकाओं और प्राथमिकताओं के अनुसार लाखों की संख्या में बड़े पैमाने पर उत्पादन की जरूरत थी जिसके लिए एक बृहद व्यवस्था और प्रणाली की आवश्यकता थी। ये प्राथमिकताएं तकनीकी विकास और युद्ध रणनीति के अनुसार बदलती रहती थीं। इन्हें केवल राज्यों द्वारा आर्थिक विकास के उच्च स्तर की स्थिति में ही योजनाबद्ध तरीके से बनाया जा सकता था। 1933-38 के दौरान विश्व की सभी शक्तियां सेना पर काफी धन खर्च कर रही थीं। जर्मनी और सोवियत संघ ने क्रमशः 28680 लाख तथा 28080 लाख खर्च किया था। जापान (12660 लाख), यूनाइटेड किंगडम (12000 लाख) और संयुक्त राज्य अमेरिका (11750 लाख) भी इस प्रक्रिया में बहुत पीछे नहीं थे। पूर्ण युद्ध के युग में 'सैनिक' और 'असैनिक' निवेशों के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं था। युद्ध शुरू होने पर सभी प्रकार के उत्पादनों का रुख युद्ध की ओर किया गया। 1944 के अंत में मित्र राष्ट्रों ने मिलकर 180000 लाख गोलों का निर्माण किया था। केंद्रीय शक्तियों ने 1000000 लाख गोले बनाए थे। युद्ध के पांच वर्षों अमेरिकी अर्थव्यवस्था ने 300000 सैनिक वायुयान और 86,700 टैंक बनाए थे। जर्मनी ने इसी अवधि 44,857 टैंक और बंदूकें तथा 1933-44 के दौरान 111767 वायुयान बनाए थे। ब्रिटेन ने सितम्बर 19.. और जून 1945 के बीच 123819 सैनिक वायुयानों का उत्पादन किया था। सोवियत संघ ने युद्ध के दौरा 136800 वायुयान, 102500 टैंक और स्वचालित बंदूकें बनाई थीं। 1943-44 में विश्व के कुल उत्पादन एक तिहाई हिस्सा युद्ध के लिए काम आने वाली वस्तुओं के उत्पाद में लगा दिया गया। सशस्त्र सेना आधुनिकीकरण, रख रखाव तथा वृद्धि रूपी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था और नागरिक जीव

को अनिवार्य रूप से सेना के लिए लामबंद करना जरूरी हो गया था। आधुनिक युद्ध प्रणाली में सभी नागरिक युद्ध में शामिल हो जाते हैं और उनमें से अधिकांश को लामबंद किया जाता है। युद्ध हथियारों से लड़ा जाता है इसलिए इनके उत्पादन का दायित्व पूरी अर्थव्यवस्था पर डाल दिया जाता है और भारी मात्रा में इनका उत्पादन किया जाता है। इन कारखानों या इनमें काम करने वाले लोगों का विध्वंस करना 'वैध' माना जाता है। कार्यशालाओं और कृषि क्षेत्र में उत्पादन में कमी लड़ाई के मैदान में हार से जुड़ी थी। सैन्य रणनीति के क्रूर तर्क के अगले स्वाभाविक चरण के रूप में शहरों में निहत्थे नागरिकों पर बड़े पैमाने पर बम गिराए गए।

बड़े पैमाने पर सशस्त्र लामबंदी की गई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अधिकांश शक्तियों ने लगभग 20% संसाधनों का उपयोग किया। यह लामबंदी कुछ वर्षों तक चली। इससे स्त्री रोजगार के क्षेत्र में एक तरह की सामाजिक क्रांति आ गई क्योंकि महिलाएं भी घर से बाहर निकलकर उत्पादन की प्रक्रिया में शामिल हो गईं। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यह प्रवृत्ति थोड़े समय के लिए रही। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इसमें स्थायित्व आ गया। केवल जर्मनी में महिलाओं को घर से बाहर मजदूरी करने की अनुमति नहीं थी क्योंकि नाजी राज्य का सैद्धांतिक मत था कि महिलाएं अपने घर से बाहर काम करने के योग्य नहीं थीं (देखिए खंड 7 इकाई 27)

जर्मनी में युद्ध से जुड़ी उत्पादन प्रक्रियाओं और उद्योगों में लगभग 150 लाख दास मजदूर काम कर रहे थे जो पराजित देशों से थे। इस युद्ध का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी था कि इस युद्ध में कोई पक्ष या तो पूरी तरह हारता था या जीतता था। इससे पहले युद्ध किसी खास या सीमित उद्‌देश्यों के लिए लड़े जाते थे। परंतु दोनों विश्व युद्धों में लक्ष्यों की कोई सीमा नहीं थी। दूसरे विश्व युद्ध में प्रयुक्त 'बिना किसी शर्त के आत्म समर्पण' का मुहावरा इसी का प्रतिफलन था। इसी कारण से उत्पादन के सभी संसाधनों को पूर्ण युद्ध में झोंक दिया गया। ये संसाधन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं एवं सहयोगी अर्थव्यवस्थाओं दोनों से लिए गए। इसकी पुष्टि ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के उदाहरण से की जा सकती है। हालांकि इसके पूरे संसाधन हथियारों के उत्पादन में लगे हुए थे। परंतु इसके बावजूद इसकी जरूरतों की पूर्ति नहीं हो पा रही थी और इसे अस्त्रों की पूर्ति के लिए अमेरीका पर निर्भर रहना पड़ रहा था जो खुद को गर्वपूर्वक 'प्रजातंत्र का शस्त्रागार' मानता था। संयुक्त राज्य अमेरीका ने मित्र राष्ट्रों से हुए शस्त्र संबंधी सभी अनुबंधों पर सभी प्रकार के प्रतिबंध हटा दिए। उधार-पट्‌टे रूपी समझौते के तहत तुरंत राशि भुगतान जैसे प्रतिबंधों को भी हटा दिया गया।

31.3 जन-हत्या के लिए अपनाई गई परिष्कृत प्रौद्योगिकी

19वीं और 20वीं शताब्दी में हथियार बनाने के लिए औद्योगिक और तकनीकी साधनों का प्रयोग किया गया ताकि ये अधिक से अधिक विनाश कुशलता से पूरे विश्व में दूर-दूर तक कर सकें।

31.3.1 तोप तथा टैंकों का प्रयोग करने वाला सशस्त्र सेना का एक अंग

19वीं शताब्दी के अंत तक युद्ध हथियार बनाने में ब्लैक पाउडर का इस्तेमाल किया जाता था। इसके बाद से नाइट्रोसेल्यूलस का इस्तेमाल किया जाने लगा गया जो 'बारूदी रूई' के नाम से प्रसिद्ध था। इससे ब्लैक पाउडर की तुलना में तीन गुनी ऊर्जा पैदा होती थी। यह नमी से खराब नहीं होता था और इसे जलाने पर खूब धुंआ निकलता था जिसके कारण बंदूक की नली में कम गंदगी बैठती थी। इसके अलावा बंदूकों तथा उससे चलाई जाने वाली गोली के स्वरूप में भी काफी तकनीकी सुधार हुआ। एलफर्ड क्रुप (1951) ने पूर्णतः इस्पात की बंदूकें बनाई जिसे एक ही सांचे में ढाला गया था। 1860 ओर 1870 के दशक में नाल के पीछे से गोली डालने की तकनीक शुरू हुई जिसमें बीच से बंदूक को खोलकर उसमें गोली भरी जाती थी। इससे राइफल चलाने में भी सुविधा होती थी। इस विधि से निशाना भी अचूक लगता था। इस तकनीकी से लंबी गोली की क्षमता और मजबूती भी बढ़ी। इसकी हवा में मार करने की भी शक्ति बढ़ी क्योंकि इससे निकली हुई गोली हवा में तेजी के साथ बढ़ती थी। इसके अलावा बंदूक की तकनीक में सुधार लाया गया। इस सुधार के अन्तर्गत गोली छूटने के बाद फिर बंदूक अपने पहले की स्थिति में आ जाती थी। प्रथम विश्व युद्ध की खंदक युद्ध प्रणाली के कारण लंबी दूरी तक वार करने वाली और अचूक निशाने वाली भारी बंदूकें बड़ी संख्या में बनाई जाने लगीं। अब युद्ध में टोह लेकर दुश्मन के ठिकानों का पता लगाया जाता था। दुश्मन के ठिकानों का नक्शा तैयार करके सावधानीपूर्वक सोच समझ कर हमला किया जाता था। मोर्चे पर टेलीफोन और रेडियो के प्रयोग से भी तोपों

और मशीनों के कुशल प्रयोग में सहायता मिली। द्वितीय विश्व युद्ध में विमानभेदी तोपों को विकसित किया गया और इससे क्षति पहुंचाने की क्षमता बढ़ी। थल सेना और नौसेना में तोपों तथा मशीनों का प्रयोग करने वाले सेना के अंग की भूमिका कम होने लगी और बम गिराने वाले हवाई जहाजों का महत्व भी कम हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हल्की और इधर-उधर ले जाने वाली बंदूकों और तोपों की अधिक मांग हुई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उपयोग में लाई गई कुछ प्रमुख विमानभेदी तोपों के नाम इस प्रकार है : अमेरिका और इंग्लैंड की 40 मी.मी. बोफोर्स तोप, सोवियत एम–1939 37 मी.मी. तोप और जर्मन 88 मी.मी. तोपें। हथियारभेदी हथियारों (शस्त्र) के विकास से टैंकों के प्रयोग में बाधा पहुंची।

31.3.2 पैदल चलने वाला सशस्त्र सेना का अंग

अमेरिका की गैटलिंग गन और फ्रांसीसी मित्राल्यूस आरंभिक मशीनगनें थीं। प्रथम विश्व युद्ध में भारी मशीनगनों का निर्माण हुआ। हिराम स्टीवेन्स मैक्सेम ने पहली बार सफलतापूर्वक स्वचालित मशीनगन का निर्माण किया। सबसे पहले 1895 में ब्रिटिश सेना ने इसका उपयोग किया और जापान युद्ध (1904-05) में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अपने बड़े आकार और वजन के कारण इसका उपयोग प्रतिरक्षा के लिए किया गया। फ्रांसीसी हॉचकिस गैस द्वारा संचालित तथा वायु से ठंडी होने वाली भारी मशीनगन थीं जबकि आस्ट्रिआई श्वार्जलोस का उपयोग करते थे। 1915 के बाद हल्की मशीनगन का निर्माण तथा उपयोग शुरु हुआ, जैसे ब्रिटिश लेविस गन, फ्रांसीसी शौशेट और अमेरिकी ब्राउनिंग स्वचालित राइफल। इन्हें आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता था। 1918 में लूइस शिमेसर नामक एक जर्मन व्यक्ति ने एक उपमशीनगन का निर्माण किया परंतु द्वितीय विश्व युद्ध में भारी मशीनगनों का ही इस्तेमाल होता रहा। हल्की मशीनगन जैसे जर्मन एम जी–34/42, सोवियत डेगट्रेव, ब्रिटिश ब्रेन और यूएस बीएआर प्रति मिनट 350-600 गोलियां बरसाती थीं। सब-मशीनगन जैसे जर्मन एम पी–38/40 सीरिज जो 'बर्प' बंदूकों के नाम से प्रसिद्ध थीं; सोवियत पीपीडी और पीपीएसएच अमेरिकी थॉमसन और ब्रिटिश स्टेन नामक हल्की मशीनगनों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद पूर्ण रूप से स्वचालित शस्त्रों जैसे हमला करने वाली राइफलों का निर्माण किया गया जिनमें सब-मशीनगन की वार करने की क्षमता और राइफल के अचूक निशाने जैसी तकनीकों का सम्मिश्रण था। इनमें जर्मन एमपी-44 और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत कलाशनिकोव और एके 47 प्रमुख थीं।

31.3.3 मशीनी युद्ध के अंतर्गत उभरे नए पहलू

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान टैंक, वायुया, पनडुब्बी, वायुयान वाहक पोत बनाए गए परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ही उनकी विनाश करने की क्षमता का पूरी तरह से प्रयोग हुआ। 20वीं शताब्दी के आरंभ में चक्केवाले हथियारबंद वाहनों के विकास के साथ-साथ टैंकों का भी विकास हुआ। इसके बाद खंदकों को तोड़ने वाले हथियारबंद वाहनों का विकास हुआ। 1915 में ब्रिटेन में पहली बार 'लिटिल विली' और 'विग विली' टैंकों का निर्माण किया गया। फ्रांसीसियों ने श्नेडर का निर्माण किया। 1917-18 में फ्रांस अमेरिका और इटली में पैदल चलने वाले सशस्त्र सेना के अंग की मदद के लिए हल्के और तीव्र गति से चलने वाले टैंकों का निर्माण किया गया। दो विश्व युद्धों के अंतराल के दौरान टैंकों या हथियारयुक्त टैंकों का उत्पादन हुआ। दो विश्व युद्धों के अंतराल के दौरान सोवियत संघ ने सबसे ज्यादा टैंकों का उत्पादन किया। 1930-39 के बीच 20 हजार टैंक बनाए गए जो 75-76 मी.मी. गनों से युक्त थे। 1939 में जर्मनी के पास केवल 3195 टैंक थे परंतु इन टैंकों को अलग-अलग यूनिटों में भेजने के बजाए उन्हें पैंजर डिविजन के अन्तर्गत एक ही साथ रखा गया जो द्वितीय विश्व युद्ध के प्रथम दो वर्षों में उसके शत्रुओं के लिए एक बड़ी चुनौती साबित हुआ। सोवियत रूस, ब्रिटेन, जर्मनी और अमेरिका में बड़े पैमाने पर टैंकों का उत्पादन किया गया। टैंकों ने युद्ध के मोर्चे पर गतिविधियों को बढ़ावा दिया और उसे लचीला बना दिया और दुश्मन के इलाके में तेजी से घुसकर वार करने की क्षमता बढ़ गई तथा नागरिकों के लिए यह विनाशकारी साबित हुआ। प्रथम विश्व युद्ध में पनडुब्बी भी बड़े पैमाने पर प्रयोग में लाई गई। जर्मनी ने पानी के भीतर से वार करने वाले मिसाइलों या टोरपीडो का इस्तेमाल कर मालवाहक जहाजों को ध्वस्त किया। जर्मनी द्वारा एटलांटिक सागर में और अमेरिकी नौसेना द्वारा प्रशांत महासागर में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बड़े पैमाने पर इनका इस्तेमाल किया गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मन यू-बोट (अन्डर सी-बोट) अत्यन्त हीं घातक सिद्ध हुई। नौसेना युद्ध में युद्ध अन्तराल के दौरान अमेरिकी नौसेना का एग्रोनॉट और दूसरे विश्व युद्ध में गाटो और बलाओ पनडुब्बियों ने निर्णायक भूमिका अदा की। संसाधनों के योजनाबद्ध उपयोग और रणनीति के संदर्भ में समुद्र पर नियंत्रण स्थापित करना

जरूरी हो गया था और इसलिए युद्धपोतों ने इसमें निर्णायक भूमिका अदा की। ब्रिटिश रॉयल नेवी ने 'ड्रेड नॉट' नाम का एक भारी जहाज बनाया। हालांकि लड़ाकू विमानों के आने के बाद नौसैनिक युद्ध का क्षेत्र और भी व्यापक हो गया। केवल प्रथम विश्व युद्ध में ही इसके कारण जहाज की वार करने की क्षमता और समुद्र के व्यापक क्षेत्र पर नजर रखने की क्षमता बढ़ गई। इस प्रकार विमान वाहक युद्धपोतों का युग शुरू हुआ। हालांकि इन युद्धपोतों से पूरी लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती थी। आधुनिक नौसैनिक युद्ध में समुद्र पर नियंत्रण रखने का मतलब यह था कि समुद्र के ऊपर वायु में और समुद्र के नीचे भी नियंत्रण रखा जाए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका का 27,500 टन एसेक्स कैरियर प्रमुख विमान वाहक युद्धपोत था जो 100 विमानों को ढो सकता था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रशांत महासागर में यह अमेरिका का प्रमुख युद्धपोत था। इसी प्रकार पर्ल हार्बर (1941) और कोरल समुद्र के युद्ध (मई 1942) में जापान के युद्धपोतों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

31.3.4 सेना वैमानिकी पूर्ण युद्ध के काल में

पूर्ण युद्ध के युग में उन सभी आविष्कारों और खोजों को जो युद्ध के लिए संसाधन विकसित करने में प्रयुक्त हो सकते थे उनका इस्तेमाल किया गया। प्रथम विश्व युद्ध में प्रारंभिक तौर पर जर्मनी के जेपलिन नामक लड़ाकू विमानों का उपयोग किया गया। परंतु यह बहुत प्रभावी साबित नहीं हुआ। जर्मन जेपलिन ने 1915 से लेकर अगस्त 1918 तक 51 हवाई हमले किए और कुल 196.5 टन के 5,806 बम गिराए। इन हवाई हमलों में केवल 557 लोग मारे गए और 1,358 घायल हुए। युद्ध के दौरान फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली और अमेरिका ने वायुयानों के बड़े दस्ते बनाए। युद्ध अंतराल के युग में इंजनों में काफी सुधार किया गया और उन्हें एयरकूल के स्थान पर लिक्विड कूल बनाया गया। इसके अलावा इनमें ऊपरी आवरण के तौर पर लकड़ी के स्थान पर धातु का उपयोग किया जाने लगा। लड़ाकू विमानों के इंजन के डिजाइन बनाने और बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाली प्रमुख कम्पनियां इस प्रकार थीं: जर्मनी की डेवलर-बेंज, अमेरिका में जेनरल मोटर्स का एलिसन डिविजन, ग्रेट ब्रिटेन में रायल्स राय और नेपियर। लड़ाकू विमानों में भी सुधार किया गया। 1931 में बोइंग एयर क्राफ्ट कम्पनी ने बी 9 नामक बोम्बरों का निर्माण किया। इसे आधुनिक लडाकू विमानों का प्रारंभिक स्वरूप माना जा सकता है। द्वितीय विश्व युद्ध में बड़ी संख्या में लड़ाकू विमानों, बोम्बरों (हल्के, मध्यम और भारी) और मालवाहक जहाजों के लिए वायुयानों का उत्पादन किया गया। इन बोम्बरों से बड़े पैमाने पर विध्वंस होता था ओर यह दुश्मन के ठिकानों का विनाश कर देते थे। हालांकि हवाई जहाज से नागरिक ठिकानों पर बम गिराया जाना काफी भयानक और डरावना होता था परंतु इसमें भी खंदक युद्ध प्रणाली का हवाई स्वरूप सिद्ध हुआ जिसमें जान-माल की अपेक्षाकृत कम हानि होती थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुई कुल मौतों में से मात्र 3 % मौतें हवाई जहाज से बम गिराए जाने की वजह से हुई थीं और यह तरीका दुश्मनों के शस्त्र उत्पादन उद्योगों को नष्ट करने में पूरी तरह असफल रहा और जल्द ही यह बहुत मंहगा साबित हुआ। अप्रैल 1942-45 के बीच 593,000 जर्मन मारे गए और जर्मनी में 33 लाख घर नष्ट हुए। परमाणु बम सैन्य दृष्टि से लक्ष्य को प्राप्त करने की रणनीति का एक अपेक्षाकृत कम खर्चीला साधन था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध से जुड़ी यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं ने भी अमेरिका की व्यापक-उत्पादन की व्यवस्था का अनुगमन किया। बड़ी तादाद में मानकीकृत अन्तरपरिवर्तनीय हिस्सों का निर्माण किया गया और फिर अंतिम उत्पाद कई हिस्सों को जोड़कर तैयार किया गया । यह बड़ी ही अजीब बात है कि उत्पादन की यह व्यवस्था सबसे पहले 1860 के दशक में किनसिनाटी और शिकागो के बूचड़खाने में शुरू की गई थी।

31.3.5 रासायनिक युद्ध

जर्मनी ने फ्रांसीसी और अल्जिरियाई क्षेत्रीय सेना के खिलाफ 22 अप्रैल 1915 को येप्रेस के 6 किलोमीटर के मोर्चे पर क्लोरिन का उपयोग किया था। बाद में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फोसजिन और मस्टर्ड गैस का भी प्रयोग किया गया था। परंतु बेहतर गैस मास्क और रसायन के दुष्प्रभाव से रक्षा करने वाले कपड़ों के निर्माण से रासायनिक युद्ध प्रणाली का प्रभाव कम हो गया था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान लगभग 100,000 टन रासायनिक पदार्थों का उपयोग हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रासायनिक हथियार जुटाए गए थे। परंतु उनका उपयोग नहीं किया गया। सैन्य दृष्टि से इनके निष्प्रभावी होने और दूसरों द्वारा भी इनके प्रयोग किए जाने के भय से इनका प्रयोग नहीं किया गया।

बोध प्रश्न 1

1) पूर्ण युद्ध से आप क्या समझते हैं ? सैनिक रणनीति को इसने किस प्रकार प्रभावित किया? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) मशीनी युद्ध प्रणाली के क्षेत्र में प्रयोग हुई परिष्कृत प्रौद्योगिकी की सूची बनाइए। इन तकनीकों ने युद्ध की प्रकृति को किस प्रकार परिवर्तित किया ? अपना उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

....

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित में से कौन से वक्तव्य सही (✓) और कौन से गलत (X) हैं – निशान लगाइए।

i) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान खंदक युद्ध प्रणाली जमीन पर पूर्ण युद्ध को परिलक्षित करती थी।

ii) औद्योगीकरण ने सैनिक रणनीति को प्रभावित नहीं किया।

iii) आधुनिक व्यापक युद्धों में 'नागरिक' और 'सैनिक' ठिकानों का अन्तर समाप्त हो गया।

iv) द्वितीय विश्व युद्ध में नागरिक ठिकानों पर बड़े पैमाने पर बम गिराया जाना निर्णायक साबित हुआ।

v) नैतिक/कानूनी कारणों से विश्व युद्धों में रासायनिक हथियारों का उपयोग सीमित रहा।

31.4 परमाणु हथियार : पूरी दुनिया को नष्ट करने के लिए तकनीकी सामर्थ्य की प्राप्ति

परमाणु बम का बनना, सन 30 के दशक में आधुनिक भौतिकी में हुई कुछ विशेषज्ञ खोजों के कारण संभव हुआ। इनमें प्रमुख हैं कृत्रिम रेडियोएक्टिवता की खोज और अमेरीकी वैज्ञानिक एनरिको फर्मी के प्रयोग। अपने प्रयोग में एनरिको फर्मी ने जब यूरेनियम नाभिक पर कम वेग वाले न्यूट्रॉनों से बमबारी की तो उन्होंने पाया कि यूरेनियम नाभिक का विखण्डन हो गया और बहुत अधिक मात्रा में ऊर्जा निकली। नाभिकीय विखण्डन (nuclear fission) की यह प्रक्रिया परमाणु बम के निर्माण का आधार बनी। संयुक्त राज्य अमेरीका द्वितीय विश्व युद्ध में दिसंबर 1941 से सक्रिय हुआ और तभी से परमाणु बम के निर्माण के लिए मैनहैटन परियोजना शुरू की गई। कर्नल लेसली ग्रोव्ज मैनहैटन इंजीनियर जिले के प्रमुख बने। अक्टूबर 1942 को, इस योजना का पुनर्गठन हुआ और वैज्ञानिक जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर प्रोजेक्ट Y नामक समूह के निदेशक बने। यही वह समूह था जिसने परमाणु बम को डिजाइन किया।

परमाणु बम के पीछे प्रमुख सिद्धांत यह था : यूरेनियम, प्लूटोनियम जैसे कुछ नाभिकों की विखण्डन प्रक्रिया में अत्यधिक ऊर्जा के साथ-साथ न्यूट्रॉन भी निकलते हैं। इनमें से कुछ न्यूट्रॉन अन्य नाभिकों का विखण्डन करते हैं। अब सवाल यह था कि यूरेनियम या प्लूटोनियम की कितनी मात्रा होनी चाहिए कि उनके विखण्डन में इतने ज्यादा न्यूट्रॉन उत्पन्न हो कि वह प्रक्रिया लगातार चलती रहे। मैनहैटन योजना में 1944 तक इस विशेष मात्रा की खोज और इस प्रक्रिया के नियंत्रण पर लगभग 1 अरब डॉलर खर्च किए जा रहे थे। जुलाई 1945 में, दक्षिण केंद्रीय न्यू मेक्सिको में प्लूटोनियम के विखण्डन पर आधारित परमाणु बम का परीक्षण किया गया। 6 अगस्त, 1945 को 8.15 प्रातः स्थानीय समय पर हिरोशिमा पर, इनोला ग्रे नामक अमेरीकी बी-29 बॉम्बर हवाई जहाज उड़ा। इस जहाज से लिटिल बॉय नामक एक यूरेनियम बम का शहर से 1900 फीट ऊंचाई पर विस्फोट किया गया ताकि अधिकाधिक विनाश हो सके।

इस बम में 130 पाउन्ड से भी कम यूरेनियम के इस्तेमाल से इतनी ऊर्जा निकली जो टी.एन.टी. नामक रासायनिक विस्फोटक की 15000 टन मात्रा से निकलती है। इसके परिणाम घनघोर विनाशकारी थे।

31.5 सैनिक संस्थाओं और प्रशासनिक तंत्र में बदलाव

बड़े पैमाने पर हुए युद्ध के कारण उत्पादन संगठन और प्रबंधन को भी व्यापक बनाने की जरूरत पड़ी। यहां तक कि मनुष्य जीवन को नष्ट करने की प्रक्रिया को भी एक व्यवस्थित रूप दिया गया। जर्मनी के यातना शिविर इसके प्रमाण थे।

नए सैनिक उद्यमों में बड़े औद्योगिक उद्यमों की कई विशेषताएं शामिल हो गईं। इसमें आधुनिक व्यापार के तरीके, कार्यक्रम संगठन, रिकॉर्ड रखने की व्यवस्था, मूल प्रति की नकल करने की व्यवस्था, अलग-अलग खानों में विभक्त करने की व्यवस्था की गई। इसके अलावा संचार के विभिन्न साधनों और उन सभी तंत्रों का इस्तेमाल किया गया जो एक बड़े उद्योग चलाने के लिए जरूरी थे। इस प्रकार सैनिक रणनीति के प्रबंधन में एक प्रकार का व्यापारिक नेतृत्व सामने आया जिसमें बड़े व्यापार निगम की कई विशेषताएं शामिल थीं। मशीनी युद्ध प्रणाली और तात्कालिक संचार व्यवस्था, जो कि प्रौद्योगिकी और व्यवस्थागत संसाधनों का उपयोग जैसे पहलुओं को प्रतिबिंबित करते थे, के कारण सैन्य कार्य प्रणाली नौकरशाही द्वारा संचालित होती रही और दैनिक कार्यकलापों नियमों, कानूनों में बंधती चली गई। सेनाधिकारी वस्तुतः 'हिंसा के प्रबंधक' बन गए। सेना में बड़े पैमाने पर हुई लामबंदी के कारण उसमें युद्ध करने वालों की तुलना में युद्ध न करने वाले कार्मिकों के प्रतिशत में भी अंतर आया। सामान जुटाने, आपूर्ति करने, संचार व्यवस्था जुटाने आदि से जुड़े कार्मिकों की संख्या बढ़ी। उदाहरण के लिए 1945 में कुल अमेरीकी सेना में ऐसे कार्मिकों की संख्या 45% थी। इसके अलावे युद्धरत आधुनिक समाज में डिपो, अस्त्रागारों और कारखानों को चलाने के लिए नागरिक कामगारों और विशेषज्ञों की जरूरत थी। संसाधन और उत्पादन के कारकों को दिशा निर्देश देने के लिए नए प्रशासनिक नियंत्रण से संबंधित उपाय लागू किए गए।

अधिकांश युद्धरत देशों में बाजार व्यवस्था को बाजार के रूझानों से अलग कर दिया गया और उस पर नियंत्रण स्थापित किया गया। पूरी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को युद्ध उत्पादन की प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं के अनुसार ढाला गया। अब युद्ध केवल कुछ वित्त जुटाने तक ही सीमित नहीं रह गया बल्कि इसमें सभी आर्थिक संसाधनों को जुटाने की बात की जाने लगी। मूल्यों, मजदूरी, करों और ऋणों जैसे वित्तीय नियंत्रण के उपाय तो किए ही जा रहे थे परंतु इसके साथ-साथ उत्पादन की अधिक से अधिक शाखाओं को प्रशासनिक नियोजन और नियंत्रण के अधीन लाया गया। उत्पादन प्राथमिकताओं का निर्धारण केंद्रीय प्रशासनिक एजेंसियों को करना था [जैसे अमेरीका में युद्ध उत्पादन बोर्ड (1942), या युद्ध लामबंदी कार्यालय (1943-45), जर्मनी में युद्ध उत्पादन मंत्रालय (1943-44) और नवम्बर 1943 के बाद जापान में शस्त्र मंत्रालय]। अब सरकारी प्रशासन में अर्थशास्त्रियों, वैज्ञानिकों, सांख्यिकीविदों, इंजीनियरों और व्यापारियों जैसे नए विशेषज्ञों की भी जरूरत थी।

अर्थव्यवस्था के बारे में सही-सही जानकारी प्राप्त करने और प्राथमिकता के आधार पर निर्णयों को लागू किए जाने के लिए बृहद प्रशासनिक संगठनों की आवश्यकता थी। जनतांत्रिक देशों में भी प्राथमिकताओं का निर्धारण नौकरशाही करने लगी। एक प्रकार के आर्थिक निर्णयों के लिए एक ही प्रकार के प्रशासनिक समाधान किए जाने लगे। युद्ध के कारण 'सेना-उद्योग परिसर' का विकास हुआ जो सेना, उद्योग, बैंकिंग, श्रम

शैक्षिक क्षेत्र के संभ्रांत लोगों का मिला जुला रूप था। इनका काम हथियारों के लिए बाजार ढूंढना तथा पूरी दुनिया में अर्थव्यवस्था का विस्तार करना था। 1900 के बाद से अधिकांश औद्योगिक राज्यों में सेना, उद्योग और राजनीतिज्ञों के बीच आपसी सहयोग और हितों की परस्पर निर्भरता देखी जा सकती थी। सैनिक शक्ति बढ़ने से राजनीतिज्ञों को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बल मिला, उद्योगपतियों को भारी मुनाफा हुआ और सत्ता के नजदीक आने का मौका मिला तथा सैन्य कार्यक्रम के हिस्से के रूप में वैज्ञानिकों को शोध परियोजनाओं के लिए धन मिला। सेना के कार्मिकों ने नए उत्पादों की मांग की और नई प्रौद्योगिकी की उपलब्धता के कारण नई युद्ध योजनाएं बनाने का अवसर प्राप्त हुआ। अन्ततः मजबूत सैन्य उद्योगों के कारण मंदी के दौर में भी काफी लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। युद्ध ने अस्त्र निर्माण के बड़े कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया और इसके लिए वित्त की उपलब्धता कराई।

31.6 पूर्ण युद्ध के परिणाम

युद्ध ने भारी तबाही मचाई और जान-माल की काफी हानि हुई। इससे पहले कभी भी एक घटना में इतने लोग नहीं मारे गए थे। इस युद्ध में जितना व्यापक विध्वंस और नर-संहार हुआ था जितने लोग एक साथ बेघर हुए थे उतना पहले कभी नहीं हुआ था।

31.6.1 व्यापक विध्वंस

पूर्ण युद्ध के दौरान व्यापक पैमाने पर विजिताओं और पराजिताओं दोनों के जान-माल की व्यापक हानि हुई और इससे उनकी उत्पादन क्षमता पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान युद्ध और उससे जुड़े कारणों से लगभग 80 लाख से ज्यादा लोग मारे गए। द्वितीय विश्व युद्ध में अनुमानतः प्रथम विश्व युद्ध की तुलना में 3 से 5 गुना लोग मारे गए। यह संख्या इतनी ज्यादा थी कि सही संख्या का अनुमान लगाना बेमानी हो गई। द्वितीय विश्व युद्ध में लगभग 51 लाख यहूदियों को बलि पर चढ़ा दिया गया। दूसरे विश्व युद्ध में सोवियत संघ, पोलैंड और युगोस्लाविया की कुल जनसंख्या के लगभग 20% लोग मारे गए। जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया, हंगरी, जापान और चीन के 4 से लेकर 6% लोग मारे गए। ब्रिटेन और फ्रांस में केवल 1% लोग मारे गए। उत्पादन क्षमता में भी भारी कमी आई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोवियत संघ में युद्ध से पूर्व की पूंजी में लगभग 20%, जर्मनी में 13%, इटली में 8%, फ्रांस में 7% और ब्रिटेन में 3% की गिरावट आई। परंतु अमेरीकी अर्थव्यवस्था में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रतिवर्ष 10% की दर से उछाल आया क्योंकि यह युद्ध क्षेत्र से दूर था और मित्र राष्ट्रों की अस्त्रों की बढ़ती मांग की पूर्ति यही कर रहा था। सोवियत संघ में काफी लोग मारे गए और काफी सम्पत्ति का नुकसान हुआ। वहां 17,000 शहर और 70 हजार गांव या तो पूरी तरह नष्ट हो गए या उनको काफी नुकसान पहुंचा। कारखानों, रेल लाइनों, अस्पतालों, स्कूलों, पुस्तकालयों और सामूहिक खेतों को भी नुकसान पहुंचा। यूरोप और सुदूर पूर्व क्षेत्रों में अधिसंरचना को काफी नुकसान पहुंचा।

31.6.2 नर-संहार

पूर्ण युद्ध के दौरान पहली बार पूरी की पूरी आबादी को नष्ट करने के लिए आधुनिक तरीकों का इस्तेमाल किया गया। प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की ने असंख्य अर्मेनियाइयों (लगभग 15 लाख लोगों) की हत्या कर दी गई। इसी प्रकार के प्रयत्नों और संगठित समूहों खासकर सरकार द्वारा किसी खास राष्ट्रीय, राजनैतिक, जातीय या धार्मिक समूहों को योजनाबद्ध तरीके से मारने को नर-संहार की संज्ञा दी गई।

नवम्बर 1938 की रात 'टूटे शीशों की रात' (जर्मन में कृस्टैलनैच) साबित हुई और उस रात नाजियों ने लगभग 51 लाख यूरोपीय यहूदियों का कत्ल कर दिया। 9 नवम्बर 1938 की रात को भी यहूदियों की हत्या की गई और लगभग 20 से 30 हजार यहूदियों को यातना शिविरों में भेज दिया गया और उनके व्यावसायों को तथा प्रार्थना घरों को नष्ट कर दिया गया। पोलैंड, बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया, फ्रांस और सोवियत संघ के बड़े हिस्से पर जर्मनों का आधिपत्य हो जाने से और भी यहूदी नाजी नियंत्रण में आ गए। उन्हें गैस चैम्बरों में डालकर मारा गया। कारखानों में दास मजदूरों के रूप में काम कराया गया। उन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। इस प्रकार तर्कसंगत नौकरशाही व्यवस्था द्वारा नाजियों पर अत्याचार किए गए।

31.6.3 बेघर होना

पूर्ण युद्ध न केवल हत्याओं का युग साबित हुआ बल्कि इस दौरान काफी लोगों को अपना घर बार छोड़ना पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध के बाद बड़ी संख्या में लोग बेघर हुए और उनका देश उनसे छूट गया। रूसी क्रांति और उसके बाद हुए गृह युद्ध के दौरान लगभग 20 लाख लोग अपना घर बार छोड़ बैठे थे। 1 करोड़ 30 लाख ग्रीकों को तुर्की से निकालकर ग्रीस भेज दिया गया। 1914-22 के दौरान लगभग 40 से 50 लाख लोग शरणार्थी बन गए थे। लीग ऑफ नेशन्स ने एफ नानसेन की अध्यक्षता में एक शरणार्थी संगठन का गठन किया था जिसका उद्देश्य लोगों की सहायता करना था जिनका इस बढ़ते अधिकारतंत्रीय समाज में किसी राज्य में किसी अधिकारतंत्र के अन्तर्गत अस्तित्व नहीं था। 1920 के दशक में लीग ऑफ नेशन के शरणार्थी हाई कमीशन की संतुति पर राष्ट्रीय प्राधिकारों द्वारा एक सर्टिफिकेट जारी किया गया जिसे 'नानसेन पासपोर्ट' कहा गया। इस यात्रा दस्तावेज को 50 राष्ट्रों ने स्वीकार किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यूरोप में 4 करोड़ 50 लाख लोग बेघर हो गए थे ओर उनका देश उनसे छूट गया। इसमें जर्मनी में गैर जर्मन बेगार करने वाले श्रमिक और वे जर्मन शामिल नहीं थे जो सोवियत सेना के आने के पहले भाग गए थे। पोलैंड और सोवियत संघ के कब्जे वाले जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया और दक्षिणी पूर्वी यूरोप के हिस्सों से लगभग 1 करोड़ 30 लाख जर्मनों को निकाल बाहर किया गया। युद्ध से पैदा हुई स्थितियों जैसे भारत के विभाजन और कोरिया युद्ध से क्रमशः 1 करोड़ 50 लाख और 50 लाख लोग बेघर हुए। इजराइल की स्थापना जो युद्ध का ही एक परिणाम था से 13 लाख फिलिस्तिनी बेघर हुए।

बोध प्रश्न 2

1) पूर्ण युद्ध ने आर्थिक संगठन को किस प्रकार प्रभावित किया ? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) सैनिक-औद्योगिक समूह से आप क्या समझते हैं? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

31.7 सारांश

इस इकाई में हमने जाना कि आधुनिक युद्ध प्रणाली में व्यापक स्तर पर लामबंदी की गई। इसमें विचारधारात्मक प्रेरणा भी काम कर रही थी और नई प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी में बदलाव से युद्ध प्रणाली में भी परिवर्तन आया। पूर्ण युद्ध की एक संकल्पना सामने आई। इसमें लोगों की निर्मम हत्याएं की गईं। इतने बड़े पैमाने पर सामाजिक लामबंदी की मांग के परिणामस्वरूप हुए संस्थागत और नीतिगत परिवर्तनों का भी हमने विश्लेषण किया। इस इकाई में हमने यह भी देखा कि किस प्रकार पूर्ण युद्ध लोगों को एकजुट करने

की राज्य की इच्छा पर ही निर्भर नहीं था बल्कि इसका सारा दारोमदार इसकी वास्तविक संगठनात्मक क्षमता पर था। इस युद्ध के दौरान निष्ठा और पहचान का प्रश्न भी उभर कर सामने आया और इसके परिणाम भी सामने आए। व्यक्ति और समूह युद्ध के कारण किसी न किसी का पक्ष लेने पर मजबूर हुए और युद्ध के बाद बहुत से लोगों के देश छूट गए और वे नई प्रशासनिक व्यवस्था में पहचान की तलाश में घूमते रहे।

31.8 शब्दावली

बेघर होना : व्यापक युद्ध के कारण लोगों का घर-बार छूटना।

विखंडीकरण : यूरेनियम, थोरियम, प्लुटोनियम जैसे भारी तत्वों को तोड़कर नए तत्व बनाने की प्रक्रिया।

विखंड्य पदार्थ : यूरेनियम 235 या प्लुटोनियम 239 जैसे तत्व जिनका विखंडीकरण किया जा सके।

नर-संहार : किसी संगठित समूह खासकर राज्य द्वारा खास राष्ट्रीय, राजनैतिक, जातीय या धार्मिक समूहों का व्यवस्थित रूप से संहार करना।

सैनिक औद्योगिक समूह : एक ऐसा जटिल समूह जिसमें सेना, उद्योग, बैंकिंग, श्रम और शोध क्षेत्र के संभ्रांत शामिल थे जिनका हित बड़े पैमाने पर अस्त्र उत्पादन में निहित था।

पूर्ण युद्ध : इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले 1918 में जर्मन जेनरल एरिक लुडेन ड्रॉफ ने किया था जिसका तात्पर्य था कि आधुनिक युद्ध लड़ने की प्रक्रिया में सभी पदार्थों तथा नैतिक ऊर्जाओं की लामबंदी करना।

युद्ध का सामर्थ्य : युद्धरत राज्यों की भौतिक, औद्योगिक और आपूर्ति क्षमता।

31.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 31.3 और 31.2

2) देखिए भाग 31.3 (खासकर 31.3.3)

3) (i) ✓ (ii) X (iii) ✓ (iv) X (v) X

बोध प्रश्न 2

1) आर्थिक नियंत्रण, उत्पादन विधियों आदि के लिए देखिए भाग 31.5

2) 31.5 भाग का अन्तिम अनुच्छेद देखिए।

3) देखिए भाग 31.6